पी० एच० नॉवेलस्मिथ : नीतिशास्त्र का उद्देश्य (Task of Ethics)

डॉ० रजनी रंजन

दर्शनशास्त्र विभाग, रामेश्वर महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर,

(बी०आर०ए० बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार)

संक्षेप (Abstract)

नॉवेलस्मिथ का कहना है कि नीतिशास्त्र हमारे व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने के प्रयासों में किस प्रकार मददगार साबित हो सकता है-इस मुद्दे पर दार्शनिकों के बीच मतभेद हो सकता है, परन्तु सभी दार्शनिक इस बिन्दु पर एकमत हैं कि नीतिशास्त्र का उद्देश्य शुभत्व की जानकारी प्राप्त करना नहीं, बल्कि शुभ बनना है। इसी कारण यदि 'शुभ जीवन', 'मानवीय शुभ', 'आनन्द' आदि की चर्चा भी होती है तो वहाँ इसे प्राप्त करने के तरीकों पर ही विशेष जोर दिया जाता रहा है, फलस्वरूप कांट जैसे कुछ दार्शनिको को छोड़कर सभी दार्शनिकों के लिए नीतिशास्त्र की विषय-वस्तु अ-प्रयोजनार्थक (Deontological) की अपेक्षा प्रयोजनवादी (teleological) ही रही है।

संकेत भाब्द **(Key words)-** अधिनीतिशास्त्र, नैतिक भाषा, शुभ जीवन, मानवीय शुभ, अप्रयोजनार्थक, प्रयोजनवाद, निर्देशात्मक वाक्य

नीतिशास्त्रीय विवेचनाओं का इतिहास उतना ही पुराना है जितना पुराना हमारी सभ्यता-संसकृति का इतिहास है, इसके बावजूद नीतिशास्त्रीय विषय-वस्तु के संबंध में अभी मतैक्य होना शेष है, कमी इसका स्वरूप सैद्धान्तिक माना गया, तो कभी व्यावहारिक। बीसवी शताब्दी की शुरूआत से ही अधिनीतिशास्त्रीय अध्ययनों का जो दौर चला है, उससे यह स्पष्ट होता है कि नीतिशास्त्र की विषय-वस्तु नैतिक पदों तथा कथनों का तार्किक विश्लेषण है। पी० एच० नॉवेलस्मिथ के समक्ष ये सारे तथ्य महत्वपूर्ण रूप से उभरते है। अपनी पुस्तक भम्जीपबे के प्रथम् अध्याय में नॉवेलस्मिथ एक नए सिरे से नीतिशास्त्रीय विषय-वस्तु को स्पष्ट करना चाहते है।

नॉवेलस्मिथ के अनुसार नीतिशास्त्र को बहुत पहले से ही एक व्यावहारिक विज्ञान के रूप में मान्यता मिली है, क्योंकि इसके अन्तर्गत सैद्धान्तिक-विज्ञानों के विपरीत

व्यावहारिक समस्याओं के संबंध में व्यवस्थित ज्ञान के अन्वेषण किये जाते है, यहाँ प्रश्नों का स्वरूप 'मुझे क्या करना चाहिए? अथवा उसने ऐसा क्यों किया?' के जैसा होता है, जिनके उत्तर आदेश, सुझाव, निर्णय आदि के रूप में दिए जाते है। इसी कारण विज्ञान की तथ्यात्मक अथवा विवरणात्मक भाषा की अपेक्षा नैतिक भाषा का प्रयोग मुख्यतः चयन करने अथवा चयन-संबंधी सुझाव के लिए किया जाता है।

यदि भााविदक अर्थ पर विचार करें तो "Ethics" अथवा "Morals" क्रम ाः "Ethos" अथवा "Mores" से निस्सृत है जो समाज में प्रचलित 'व्यवहार' अथवा 'प्रथा' को इंगित करते है परन्तु, इसका अर्थ यह नहीं है कि नीति ाास्त्री इन प्रथाओं का वर्णन मात्र करता है, क्योंकि यह कार्य तो मनोवैज्ञानिक, समाज ाास्त्री, उपन्यासकार अथवा इतिहासकार का है। वस्तुतः नीति ाास्त्री के दो कार्य प्रमुख रूप से सामने आते हैः–

(क) व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर देना, तथा

(ख) मानव व्यवहारों की मूल्यपरक समीक्षा करना

मूल्यात्मक समीक्षा संबंधी कार्य व्यावहारिक की अपेक्षा सैद्धान्तिक अध्ययन के निकट जान पड़ता है, परन्तु महत्वपूर्ण बात यह है कि नीतिशास्त्रियों ने मूल्यात्मक अथवा आलोचनात्मक पहलू को व्यावहारिक पहलू के अधीनस्थ रखा है। उनकी मान्यता रही है कि शुभ-जीवन के विषय में चर्चाएँ सुनने के बाद 'मुझे क्या करना चाहिए?' जैसे प्रश्न अनर्गल हो जाते है क्योंकि शुभ-जीवन के विषय में कुछ कहना, विवरण मात्र देना नहीं है, अपितु कुछ करने के [3] संबंध में निर्देश देना हैः- "The talk was intended to be a descriptive of anything, it was from the start assumed to be an injunction to do something…………"

परन्तु इसका अर्थ यह नहीं लगाना चाहिए की नीतिशास्त्री हर कदम पर उपर्युक्त आचरण के विषय में सुझाव देने के लिए सदा तत्पर हैः- "A philosopher is not a parish priest or universal sent or Citizen's Advice Bureau".

नॉवेलस्मिथ का कहना है कि नीतिशास्त्र हमारे व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने के प्रयासों में किस प्रकार मददगार साबित हो सकता है-इस मुद्दे पर दार्शनिकों के बीच मतभेद हो सकता है, परन्तु सभी दार्शनिक इस बिन्दु पर एकमत हैं कि नीतिशास्त्र का उद्देश्य शुभत्व की जानकारी प्राप्त करना नहीं, बल्कि शुभ बनना है। इसी कारण यदि 'शुभ जीवन', 'मानवीय शुभ', 'आनन्द' आदि की चर्चा भी होती है तो वहाँ

इसे प्राप्त करने के तरीकों पर ही विशेष जोर दिया जाता रहा है, फलस्वरूप कांट जैसे कुछ दार्शनिको को छोड़कर सभी दार्शनिकों के लिए नीतिशास्त्र की विषय-वस्तु अ-प्रयोजनार्थक (Deontological) की अपेक्षा प्रयोजनवादी (teleological) ही रही है।

दार्शनिकों की यह मान्यता रही है कि नैतिक नियमों को शुभ-जीवन जैसे लक्ष्यों की प्राप्ति के साधन मान लेना ही काफी नहीं है। शुभ के स्वरूप की पहचान, शुभ तथा अशुभ के बीच भेद करने की क्षमता आदि समस्याएँ भी नैतिकता के लिए महत्वपूर्ण हैं। ऐसे प्रश्नों के समाधान के क्रम में दार्शनिकों ने अपने ज्ञान-क्षितिज को विस्तार देकर इसमें राजनीति, मनोविज्ञान, तर्कशास्त्र को भी सम्मिलित करने के प्रयास किए।

नीतिशास्त्रीय विषय-वस्तु वैज्ञानिक विषय-वस्तु से भिन्न इसलिए भी है कि विज्ञान साधन-संबंधी समस्याओं का समाधान करता है, परन्तु नीतिशास्त्र साध्य संबंधी समस्याओं पर ही केन्द्रित रहता है, फलस्वरूप यहाँ वैज्ञानिक सिद्धान्त की तरह कोई निश्चित सिद्धान्त नहीं बनाया जा सकता है, ऐसा इसलिए कि प्रथमतः, परिस्थितियों के अनुसार लक्ष्य बदलते रहते है तथा द्वितीयतः, विज्ञानों की तरह, नीतिशास्त्रीय कोई माप-पद्धति नहीं स्थापित की जा सकती है, जिसके द्वारा दो नैतिक पदों अथवा वाक्यों में निगमनात्मक संबंध स्थापित किया जा सके, यही कारण है कि प्लेटों, स्पीनोजा जैसे-दार्शनिकों के नैतिकता को गणितीय रूप देने के प्रयासों को स्वीकार नहीं किया जा सकता है, तो दूसरी तरफ 'सुख' की गणना करने वाले उपयोगितावादियों के विचार भी नीतिशास्त्रीय दृष्टिकोण से महत्वहीन सिद्ध हो जाते है।

नॉवेलस्मिथ के अनुसार नीतिशास्त्र का संबंध केवल परिवर्तनशील आचरण-नियमों से ही नहीं है, कुछ ऐसी भी नैतिक विधियाँ है जो मूलतः कभी बदली नहीं, हाँलाकि देश-काल के अनुरूप इनके स्वरूप में भिन्नता अवश्य रहती है फिर भी ऐसे सर्वव्यापी तथा सार्वकालिक नियमों को जान लेना ही काफी नहीं है, हमे उनके भिन्न प्रयोगों को भी जानना होगा, इसी कारण कानून की तरह नैतिक नियम भी सार्वकालिक नहीं बनाए जा सकते हैः- "It is not enough to know the general, unchanging rules; we must also know how to apply them and it is for this reason that moral rules, like the law, cannot be codified for all time." चूँकि सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक आदि परिस्थितियाँ तथा ज्ञान में वृद्धि जैसे कारक नैतिक नियमों को काफी हद तक प्रभावित करते हैं, अतः नीतिशास्त्र

का उद्देश्य सिर्फ शाश्वत नियमों की स्थापना नहीं हो सकता है, नीतिशास्त्रीय विषय-वस्तु वैज्ञानिक रूप नहीं ग्रहण कर सकती हैः–“The idea of a ‘scientific morality’ ……….is as chimerical as the ideal which inspired the code Napolean.”

नॉवेलस्मिथ का कहना है कि नीतिशास्त्र के उपर्युक्त स्वरूप को शायद अरस्तू ने भलि-भाँति समक्ष लिया था क्योंकि दूसरों के लिए किसी नैतिक-संहिता तैयार करने की अपेक्षा उसने उन्हें नेक तथा विद्वान व्यक्तियों के अनुकरण करने की सलाह दी। वस्तुतः ऐसा ही कार्य प्रत्येक नीतिशास्त्री कर सकता है, इस प्रकार नीतिशास्त्र का उद्देश्य नैतिक-संहिता तैयार करना उपयुक्त सिद्ध नहीं होता है।

नीतिशास्त्र विषय-वस्तु को और अधिक स्पष्ट करते हुए नॉवेलस्मिथ हमारा ध्यान कुछ महत्वपूर्ण समस्याओं की ओर खींचना चाहते है। नॉवेलस्मिथ के अनुसार नैतिक पद वैज्ञानिक पदों के समान किसी विशेषज्ञ की संपदा नहीं होते, अर्थात् नैतिक पद सामान्य जनों के बीच प्रचलित रहते है, परन्तु के इन पदों के बीच के अथवा इनके द्वारा अभिव्यक्त भावार्थों के बीच के अन्तर्संबंध को समझ नहीं पाते है। उदाहरणस्वरूप-किन परिस्थितियों में किसी व्यक्ति को जिम्मेवार ठहराया जाय? दायित्व तथा सजा के बीच कैसा संबंध है? क्या कर्त्तव्य के लिए दायित्वबोध आवश्यक है? आदि-इस प्रकार के प्रश्न नीतिशास्त्र के महत्वपूर्ण प्रश्न है।

इनके अतिरिक्त कुछ प्रश्न शब्दार्थ से संबंधित है, जिन पर विचार करना आवश्यक है, उदाहरणस्वरूप क्या ’शुभ’ की परिभाषा ’सुख’ अथवा ’इच्छा’ के रूप में संभव है? अथवा शुभ एक अपरिभाष्य पद है? पुनः कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न नैतिक वाक्यों के स्वरूप से संबंधित है, उदाहरणस्वरूप-क्या सभी वाक्य तथ्यात्मक है? हमारे निर्णयात्मक तथा परामर्शात्मक वाक्यों का संबंध तथ्यात्मक कथनों के साथ कैसा है? पुनः यदि हम भिन्न-भिन्न वाक्यों के बीच भेद करते है तो क्या इसका कोई ठोस विभेदक आधार है? यदि हाँ, तो इसका ज्ञान तथा निरीक्षण से संभव है? यह निरीक्षण वाक्यों की व्याकरणिक संरचना का हो सकता है अथवा इनके प्रयोगों का? ये सारे प्रशन नीतिशास्त्रीय अध्ययन की सीमा के अन्दर है।

नॉवेलस्मिथ हम स्मरण कराना चाहते है कि अन्य प्रश्नों पर तो दार्शनिकों ने यथासंभव विचार किया ही है, परन्तु नैतिक पदो तथा कथनों से संबंधित तार्किक प्रश्न हाल तक उपेक्षित रहे हैः-इसका कारण यह है कि दार्शनिकों के बीच यह मान्यता रही है कि दर्शन का संबंध ’सत्य’ से है तथा सत्य

की अभिव्यक्ति का एकमात्र माध्यम प्रतिज्ञप्तियाँ है जिनका स्वरूप निदेर्शात्मक वाक्यों (Indicative Sentences) की तरह होता है, अर्थात् नीतिशास्त्रीय कथनों का स्वरूप भी निदेर्शात्मक (Indicative) के सिवा कुछ हो ही नहीं सकता, अन्य वाक्य यथा, आज्ञात्मक, भावनात्मक, परामर्शात्मक आदि वैयाकरणों के विषय हो सकते है, नीतिशास्त्रयों के नहीं, परन्तु नॉवेलस्मिथ ऐसी मान्यता को भ्रामक बतलाते है, उनके अनुसार उपर्युक्त तार्किक हठवाद ने नीतिशास्त्रीय विषय-वस्तु को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया है। वस्तुतः नीतिशास्त्र के लिए सभी प्रकार के वाक्यों का तार्किक विश्लेषण तथा उनके प्रयोगों की पहचान आवश्यक है। इस तथ्य को स्वीकार करने से कई प्रकार की भ्रान्तियाँ दूर हो सकती हैं।

नॉवेलस्मिथ द्वारा प्रस्तुत नीतिशास्त्रीय विषय-वस्तु की उपर्युक्त विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि नीतिशास्त्र को एक वैज्ञानिक शास्त्र नहीं बनाया जा सकता, अतः नीतिशास्त्रीय उद्देश्य भी वैज्ञानिक उद्देश्य से भिन्न होगा। नीतिशास्त्र के अन्तर्गत व्यावहारिक प्रश्नों का हल ढूँढ़ा जाना आवश्यक तो है ही, साथ-हीं-साथ नैतिक पदों तथा वाक्यों के स्वरूप तथा उनके अन्तर्संबंध की विवेचना भी उतनी ही आवश्यक है। दूसरे शब्दों में, मूल्यपरक विवेचनाओं के साथ अधिनीतिशास्त्रीय अन्वेषण भी नीतिशास्त्र के विचार क्षेत्र में प्रमुखता प्राप्त करते हैं।

संदर्भ सूची-

१. नीतिशास्त्र के मूल सिद्धांत - वेद प्रकाश वर्मा
2. समकालीन पाश्चात्य दर्शन - वसन्त कुमार लाल
3. Some reflection of Ethics – Dr. Ramendra
4. पाश्चात्य दर्शन का समीक्षात्मक इतिहास — या० मसीह